Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 14/02/2020 Accepted on : 26/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

महेन्द्र भीष्म जी की कलम से 'त्रासदी' कहानी

Dr. Deviyani Mahida
Asst Professor,
N. S. Patel Arts College, Anand (Gujrat)
Email – gohildp199@gmail.com

सारांश : 'त्रासदी' कहानी में लेखक ने किन्नर होने का दर्द क्या होता है ? उस नारकीय जीवन में व्याप्त घृण, अपमान, घुटन और इससे बाहर निकलने की बेचैनी क्या होती है इसका सफल चित्रण प्रस्तुत क्या गया है | यह उपन्यास किन्नर समाज की दशा और दिशा से हमारा परिचय कराने में अपनी अहम भूमिका अदा करता है

मुख्य बिंदु : त्रासदी, थर्ड जेंडर, किन्नर, तृतीयलिंगी, इत्यादि |

१ प्रस्तावना :

हिजड़ा या किन्नर शब्द सुनते ही हमारे सामने एक छबि उभरने लग जाती है, क्योंकि किन्नर शब्द ऐसे समाज के लिए प्रयुक्त होता है जो लैंगिक रूप से न नर है न नारी | वह न तो संबंध बना सकते हैं और न ही गर्भ धारण कर सकते हैं | समाज में इन्हें थर्ड जेंडर, हिजड़ा, तृतीयलिंगी, उभयलिंगी, यूनक, खोजवा, छक्का, शिखंडी, शिरूरनान गाई, अनरावनी, जनखा, पावैया, मेहला, कोती आदि कई नामों से संबोधित किया जाता है | किन्नर या हिजड़ा समुदाय भी हमारे इसी समाज का एक अंग है, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने सन् २०१४ में तृतीयलिंगी अथॉत् 'थर्ड जेंडर' की मान्यता प्रदान की |

श्री विजेन्द्र प्रताप सिंह जी द्वारा लिखित एवं डॉ. एम. फ़िरोज खान द्वारा संपादित तथा अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स कानपुर द्वारा प्रकाशित कहानी संग्रह 'थर्ड जेंडर: हिन्दी कहानियाँ' शीर्षक कहानी संग्रह की एक मार्मिक कहानी है – 'त्रासदी' |

महेन्द्र भीष्म की 'त्रासदी' कहानी उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की है | प्रसिद्धि का बड़ा कारण यहाँ स्थित रेल्वे स्टेशन की बनी भव्य गुम्बदाकार इमारत है, जो पहली बार लखनऊ आए किसी भी पर्यटक का दिल मोह लेने के लिए पर्याप्त है | इस इमारत और इसके साथ फैले रेल्वे परिक्षेत्र को चारबाग रेल्वे स्टेशन के नाम से जाना जाता है | इसी चारबाग रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्मों के बीच की है | वहाँ प्लेटफार्मों की साफ-सफाई के लिए वंशी नामक व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है | वंशी की पत्नी का नाम रति था | उनको तीन बच्चे थे, दो लडकियाँ और एक लड़का था | वह रेल्वे विभाग की क्वाटर में सुखमय जीवन बिताते हैं | उनकी दोनों जुड़वाँ बेटियाँ केन्द्रीय विद्यालय में कक्षा चार में पढ़ती है और इकलौता बेटा दीपक चार साल का होने वाला था | वंशी और रति दीपक को पढ़ाने के लिए चिंतित रहते हैं | रति देखने में अति सुंदर थी | रति को देखकर कोई विश्वास नहीं करता कि वह एक सफाई कामदार की पत्नी है | कभी-कभी पति-पत्नी प्लेटफार्म की किसी भी खाली पड़ी बेंच पर बैठकर बातें करते रहते थे | लेखक ने इस कहानी में सफाईकर्मी की वेशभूषा में बैठे वंशी और सजी-सँवरी रति की जोड़ी के तार अमृतलाल नागर रचित उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' नायक-नायिका से जोड़ते, कल्पना करते |

एक दिन इस जोड़ी को पता नहीं किसकी बुरी नजर लग गई | इंजन की शंटिंग के दौरान वंशी की मृत्यु हो जाती है | अब रति असहाय हो जाती है | वंशी की मृत्यु के बाद उनकी जगह पर रति को प्लेटफार्मों की साफ-सफाई करने की नौकरी मिल जाती है | रति की सुंदरता को देखकर कामुक व्यभिचारी उस पर कुदृष्टि से देखने लगे थे | एक दिन वासना के भूखे भेड़ियों ने रति को दबोच लिया और मालगाड़ी के डिब्बे में ले गए |

उनका मुँह दबा दिया जाता है, ताकि वह जोर से चिल्ला भी न सके | वह अपने आपको छुड़ाने की बहुत कोशिश करती है, किन्तु वह दोनों उसको मौका नहीं देते हैं | तभी प्लेटफार्म पर लोगों को नाच-गाना दिखा-सुनाकर अपना पेट पालने वाली हिजड़ा सुंदरी ने देखा कि किसी स्त्री के साथ जोर- जबरदस्ती हो रही है | वह भागकर उस मालगाड़ी में पहुँच गई और दोनों भेड़ियों से रति को बचाया | किन्तु दोनों बदमाशों ने सुंदरी को चाकुओं से घायल कर दिया था |

एक महीने तक सुंदरी का अस्पताल में लम्बा इलाज चला | फिर रति उसे अपने क्वार्टर में ले गई और उनकी देखभाल करने लगी | एक माह में दोनों के बीच एक पवित्र प्रेम ने जन्म लिया | निःस्वार्थ प्रेम यानि (प्लेटोनिक लव) एक किन्नर और स्वस्थ सुंदर विधवा स्त्री बीच पवित्र प्रेम बिना किसी स्वार्थ से एक दूसरे के दुःख दर्द को समझने लगे | बच्चे भी सुंदरी को बुआ कहकर बुलाने लगे | इधर हिजड़ा सुंदरी का चेहरा चाकुओं के वार से बिगड़ गया था | पहले की तरह लोगों को आकर्षित करने में असफल हो जाती है | और साथ ही साथ इनाम पाने में मुश्किलें पैदा करने लगा | उनको लोग भिखारी की तरह समझने लगे थे | जिसकी वजह से सुंदरी को घुटन महसूस होने लगी थी | इसके बारे में लेखक कहते हैं कि, "हिजड़ा रूप से पहले से दुःखी सुंदरी अपनी कुरूपता से मन ही मन दुःखी रहने लगी थी |"१ उपरोक्त संदर्भ में किन्नर जीवन की पीड़ा का वर्णन किया गया है|

सुंदरी की ऐसी दशा देखकर रति को दुःख होता है | और वह सुंदरी को खुश रखने का प्रयास करती है | रति और किन्नर सुंदरी को एक दूसरे का सहारा मिल गया था, किन्तु ऐसे संबंधों को हमारे समाज के लोग कहाँ मानते हैं | वही लोगों ने भी रति का अपमान किया कि एक हिजड़े से दिल दे बैठी | किन्नर की तरफ उनकी संकुचित मानसिकता के कारण वह किन्नर को तो ताने-बाने देते हैं, किन्तु किन्नर के साथ अच्छा संबंध या व्यवहार रखने वाले लोगों को भी अपमानित करते हैं और गलत दृष्टि से देखते हैं | उसका यथार्थ वर्णन महेन्द्र भीष्म जी ने इस कहानी के माध्यम से किया है –"मनुष्य का जीवन त्रासदी भरा रहता है जब तक वह जीवित है त्रासदियाँ उसके ईद-गिर्द बनी रहती है |"२

रति जब साफ-सफाई करने के लिए निकल जाती है तो किन्नर सुंदरी को अपने साथ ड्यूटी पर भी ले जाती है | किन्नर सुंदरी के साथ रहता है तो रति को अपने चारों और सुरक्षा का आवरण महसूस होता है | इस कथन के माध्यम से लेखक कहते हैं कि, "पुरुष प्रधान समाज में छिपे सफेदपोश भेडियों से उसकी रक्षा करने में सुंदरी जैसा हिजड़ा काफी था |"३ कुछ समय बिताने पर रति की बेटियों का विवाह भी कर दिया जाता है | उनका बेटा दीपक पढ़ाई में कमजोर होने के कारण गलत सोबत में पड़ जाता है और आवारागर्दी करने लगता है | किन्नर सुंदरी के साथ अपनी माँ को देखकर दीपक मन ही मन जलता रहता है, क्योंकि की सुंदरी के साथ रहकर माँ को बीड़ी पीने की आदत पड़ गयी थी | और वह दीपक से सहन नहीं होता है | इसीलिए किन्नर सुंदरी ने "अपना डेरा रति के घर से हटाकर चारबाग रेल्वे स्टेशन पर पूर्व की भाँति जमा लिया था | जहाँ ड्यूटी से खाली रति उससे मिलने- बतियाने पहुँच जाती | वही सुकून से सुंदरी के साथ बीड़ी पीती, दुःख-सुख की बातें करती, फिर वापस अपने क्वार्टर में आ जाती |"४

किन्नर सुंदरी का दीपक से व्यवहार जान लेने के बाद रति को एक दिन छोड़कर चली जाती है | यहाँ रति भी बीड़ी पीना छोड़ देती है, लेकिन किन्नर सुंदरी बीच-बीच में उसको मिलने के लिए आती रहती है | फिर भी रति दुःखी ही नजर आती है | बेटा दीपक भी रति का कहना नहीं मानता था | दीपक की शादी की चिंता रति को रात-दिन सताती रहती है | दीपक का कॉलोनी में अन्य परिवार की लड़की से प्रेम संबंध बन गए थे | समय बीतने पर वह लड़की दीपक के बच्चे की माँ बन जाती है | इस बात का पता जब लड़की के माता-पिता को हो जाने के कारण रति के साथ बवाल मचाते हैं | पंचजनों की राय लेकर दीपक का ब्याह उसी लड़की से दीपक की मर्जी के बिना कर दिया जाता है और दीपक सारे फसाद की जड़ सुंदरी को समझता है | दीपक को

जीवनसाथी के रूप में स्वप्न सुंदरी चाहिए थी, किंतु साधारण रंग-रूप वाली मिली, वह भी जग-हँसाई के बाद | जबकि सत्यता कुछ और थी | "समाज के चार लोगों का दबाव था, बेटा बलात्कार के इल्जाम में जेल की चक्की पीसे या शादी करें | रति ने जवान बेटे को जेल जाने से बेहतर उसका ब्याह कर देना ठीक समझा|"५ समय आने पर बहू ने एक सुंदर स्वस्थ बेटे को जन्म देकर रति का हृदयांगन खुशियों से भर दिया और पति अपने पति की यादों में खो जाती है और कहती है कि मेरा पोता बिल्कुल अपने दादा जैसा ही है |

रति के तनख्वाह से परिवार ठीक चल रहा था | रोज की तरह एक दिन रति अपनी ड्यूटी समाप्त करके प्लेटफार्म नंबर पाँच पर सुंदरी से दीपक का गुजरान अच्छी तरह से चले इसलिए प्लेटफार्म पर ही रेल्वे स्वीकृति से पुड़ी-सब्जी का ठेला लगाने की बात कर रही थी | उसी समय दीपक रति को ढूँढता हुआ वहाँ आ जाता है | माँ को सुंदरी के साथ हँस-हँसकर बातें करते हुए और बीड़ी का कश लगाते हुए देखकर दीपक क्रोधित हो जाता है | वह उन दोनों के बीच की बात नहीं समझता है और किन्नर सुंदरी को गालियाँ देकर जोर से पकड़ लेता है | रति सुंदरी को बचाने की कोशिश करती है, क्योंकि उसे पता था कि सुंदरी दीपक के भविष्य के लिए सब कुछ कर रही है | लेकिन यह वास्तविकता का ज्ञान दीपक को न होने के कारण दीपक के भीतर शंका की ज्वाला और वर्षों की नफरत अब शांत होने वाले नहीं थी | आज तो फैसला होकर ही रहेगा | दीपक किन्नर सुंदरी को गठरी की भाँती उठा लेता है और प्लेटफार्म के नीचे फेंक देता है | तभी वहाँ से धड़-धड़ करती हुई मेमू ट्रेन आती है और किन्नर सुंदरी के प्राण लेकर चली जाती है और यह सब घटना देखने के बाद रति तेज चीख के साथ वहीं प्लेटफार्म पर गिर जाती है |

२ निष्कर्षत:

'त्रासदी' कहानी मानवीय संवेदनाओं के बनते बिगड़ते रिश्तों की कहानी है जिसमें सुंदरी नामक किन्नर दीपक के गुस्से और नफरत का शिकार होता है और अंत में उन्हीं को हाथों से उसकी हत्या कर दी जाती है | अतः यह त्रासदी कहानी किन्नर की त्रासदी कहानी है |

संदर्भ सूची:

१.थर्ड जेंडर: हिंदी कहानियाँ, सं. डॉ. एम. फ़िरोज़ खान, अनुसंधान पब्लिशर्स, कानपुर,प्र.सं- २०१७, पृ.१०९.
२. वही, पृ.१०९
३. वही, पृ.१०९
४. वही, पृ.१०९
५. वही, पृ.१०९,११०